वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 324
ISBN 978-93-80353-61-6

# सप्तऋषि विधान

*–मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद –*

**पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी**

*–प्रस्तुति –*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी**

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
'श्री गौतम गणधर वर्ष' वीर निर्वाण संवत् 2540-41 (सन् 2014-2015) के
अन्तर्गत शरदपूर्णिमा के शुभ अवसर पर प्रकाशित।

**-प्रकाशक-**

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान**
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
**Website : www.jambudweep.org,www.encyclopediaofjainism.com**
**E-mail : jambudweeptirth@gmail.com**
**Facebook : jaintirthjambudweep**

| द्वितीय संस्करण | वीर नि. सं. 2541, माघ कृ. नवमी | मूल्य |
|---|---|---|
| 1100 प्रतियाँ | 14 जनवरी 2015, मकर संक्रान्ति | 20/-रु. |

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित**

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

*–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–*

**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी**
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

*–: मार्गदर्शन :–*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी**
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

*–: निर्देशक एवं सम्पादक:–*

**कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी**

*–: प्रबंध सम्पादक :–*

**जीवन प्रकाश जैन**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 2011-1100 प्रतियाँ प्रकाशित

**कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

# सम्पादकीय

**–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी**

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य ही धर्म एवं संस्कृति को जीवित रखने में सक्षम है। आज से 2500 वर्ष पूर्व अनेकानेक आचार्यों ने आत्म साधना के साथ-साथ तीर्थंकर प्रभु की दिव्यवाणी को ग्रंथों में लिपिबद्ध किया, जिसके द्वारा हम जैनधर्म को हृदयंगम कर पा रहे हैं। अगर जिनवाणी न होती, तो शायद हम आत्मा का अस्तित्व ही न जान पाते और न ही कर्मसिद्धान्त का ज्ञान होता, तब कर्मव्यवस्था से अनभिज्ञ संसारी प्राणी यूँ ही चतुर्गति में भ्रमण करता रहता। वास्तव में शास्त्र तो केवली की वाणी हैं, जिनके द्वारा हम विभिन्न विषयों की जानकारी के साथ-साथ हेयोपादेय का निर्णय भी करते हैं।

आज वर्तमान में जितने भी प्राचीन ग्रंथ दिख रहे हैं उनमें से किसी साध्वी माताजी के द्वारा लिखित कोई ग्रंथ दृष्टव्य नहीं होता किन्तु वर्तमान युग गौरवशाली है जब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में साहित्यिक क्षेत्र में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया और लगभग 300 ग्रंथ रूप अनमोल रत्न हमें प्रदान किए जिनके माध्यम से हम देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में तन्मय होकर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं जिससे हमें सहज में ही अपूर्व आनंद के साथ-साथ लौकिक-आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति हो जाती है। उसी श्रृँखला में पूज्य माताजी की शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी गुरुप्रेरणा प्राप्त कर अनेकों सारगर्भित, समयोचित कृतियों की रचना कर भक्ति का सुन्दर माध्यम भक्तों को प्रदान किया है। अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की सिद्धहस्त लेखिका आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित यह ''सप्तऋषि विधान'' भी एक ऐसी कृति है, जिसके द्वारा प्राणी ऋद्धियों से समन्वित सात ऋषियों के जीवनवृत्त से परिचित होकर धर्म में तो अनुरक्त होगा ही, साथ ही उनकी भक्ति के माध्यम से रोग, शोक, दुःख, दारिद्र आदि संकटों से सहज ही छुटकारा प्राप्त कर लेगा।

अतः इस पूजन विधान के माध्यम से आप भी सप्तर्षि भगवन्तों की आराधना कर सांसारिक दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर निरोगी, सुखी जीवन की प्राप्ति करें और क्रमशः आत्मा को ऊर्ध्वगामी बनाने में सफल हों, यही मंगलकामना है।



# प्रस्तावना

**–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)**

भवदुःख में डूबा संसारी प्राणी प्रायः तीन प्रकार से दुःखी रहता है– शारीरिक, मानस और आगंतुक।

इनमें से आगन्तुक दुःखों का न तो कोई समय है और न ही उसके प्रति पूर्व जानकारी हो पाती है, किन्तु शारीरिक और मानसिक दुःखों के उपशमन के लिए प्राणी विविध प्रकार के उपायों का सहारा लेते देखे जाते हैं। जिसमें पूर्वोपार्जित पुण्य-पाप भी प्रबल निमित्त बनता देखा जाता है, जिसे संसारी प्राणी नहीं समझ पाता और कभी-कभी विचलित हो गलत मार्ग का भी सहारा ले लेता है।

ऐसी विषम और चलायमान परिस्थिति में जो प्राणी इन दुःखों का सामना करते हुए भी देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति का अवलम्बन लेते हैं, वे प्रायः दुःखों से निवृत्त होकर अपरिमित सुख की प्राप्ति करते देखे जाते हैं, और तीव्र असाता का भी उदय है तो भी उसको समता भाव से सहन कर सद्गति की प्राप्ति कर लेते हैं इसके एक नहीं अनेकों उदाहरण शास्त्रों में आते हैं। पूर्वाचार्य रचित उन्हीं शास्त्र-पुराणों में से एक पद्मपुराण नामक प्राचीन ग्रंथ में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के कथानक में उनके लघु भ्राता शत्रुघ्न द्वारा मथुरा राज्य पर विजय प्राप्त करके शासन करने पर राजा मधुसुंदर के दिव्य शूलरत्न के अधिष्ठाता देव द्वारा फैलाई गई महामारी प्रकोप का रोमांचक वर्णन आता है कि किस प्रकार से सप्तऋषि महामुनियों के द्वारा वहाँ वर्षायोग स्थापना करने से उनके शरीर से स्पर्शित हवा के प्रभाव से वह दैवी प्रकोप दूर हो गया था और तभी से जिनमंदिरों में इन सप्तर्षि महामुनियों की प्रतिमा विराजमान कर रोग-शोकादि को दूर करने के लिए उनकी भक्ति आराधना की जाती है।

वर्तमान में हम अपने आराध्य गुरुओं जैसे– चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज आदि के जीवन चरित्र पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि उनकी त्याग-तपस्या के प्रभाव से इन दुःखों से दुखी प्राणी को सातारूप सुख की प्राप्ति हुई है, फिर वे सप्तर्षि भगवान तो चारण ऋद्धिधारी महामुनि थे और उनकी तपस्या के प्रभाव से महामारी का दूर होना सहज सी बात है। वस्तुतः संत-साधु वह वैद्य हैं, जो हमें सांसारिक दुःखों से निकालकर आध्यात्मिक सुख की भी प्राप्ति करा देते हैं।

परम स्तुत्य उन्हीं गुरुओं की श्रृँखला में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिनको स्वयं आचार्यश्री विमलसागर महाराज ने 'इस युग की विशल्या' की उपमा दी थी। जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण अनुकरणीय, वंदनीय, स्तुत्य एवं आत्म साधना की दृष्टि से चिन्तनीय है।

बंधुओं! उन गुरुओं की आराधना-भक्ति से उनकी महानता में कोई अंतर नहीं आता है अपितु भक्ति करने वाले के स्वयं का ही जीवन उज्ज्वल और समुन्नत होता है तथा अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है। हम पुण्यशाली हैं कि उन देव-शास्त्र-गुरु की भक्तिगंगा में अवगाहन करने हेतु विशल्यास्वरूपा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने भक्ति साहित्य के क्षेत्र में हमें अनेक अनमोल कृतियाँ प्रदान की हैं और उसी श्रृँखला में उन्हीं की सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की सरल, सरस, सारगर्भित, हृदयस्पर्शी, सशक्त, जनजागरण में नूतन स्फूर्ति जगाने वाली लेखनी ने भी अनेकों कृतियाँ साहित्य जगत को प्रदान की हैं जिनमें से उनकी यह नूतन एवं अनूठी कृति "श्री सप्तऋषि विधान" है।

इस पूजा-विधान में एक समुच्चय पूजा एवं सात अलग-अलग पूजाएँ हैं, जिनमें क्रम-क्रम से एक-एक ऋद्धिधारी ऋषिवर को भावपूर्ण वंदन किया गया है अतः कुल आठ पूजा में सात अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। चन्द्रगुप्त के सदृश गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर स्वयं नर से नारायण बनने की उन्नत राह पर अग्रसर पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी आज के युग में उन शिष्यों के लिए एक मिशाल हैं, जो स्वयं में थोड़ी सी योग्यता के आने पर गुरु से पृथक् अपना अस्तित्व निर्माण करने की भावना रखते हैं। नाना गुणों से अलंकृत पूज्यनीय माताजी की यह सुन्दर कृति भी अवश्य ही अन्य कृतियों की तरह वन्दनीय, अभिवंदनीय और सुखप्रदात्री है, इस कृति के द्वारा आप सभी लोग गुरुभक्ति करते हुए अपने असाता कर्म को सातारूप में परिणत कर स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ सुख, सम्पत्ति, संतति, यश आदि लौकिक वैभव को प्राप्त कर परम्परा से मोक्षसुख को भी प्राप्त करें। वस्तुतः इन महर्षियों की उपासना से मानसिक शांति के साथ-साथ सम्यग्दर्शन की विशुद्धि होती है और भेदविज्ञान को प्राप्त कर भक्तगण आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाकर अपनी शक्ति अनुसार संयम धारण करने के लिए भी उद्यमशील हो सकते हैं अतः इस विधान को करने-कराने वाले सभी देव-शास्त्र-गुरु भक्त इस विधान से इहलोक और परलोक की सिद्धि करें यही शुभेच्छा है।



# परमपूज्य राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

इस संसार में प्रत्येक जीव सुख चाहता है और दुःखों से भयभीत रहता है। प्रायः देखा जाता है कि सुख के क्षण कब बीत जाते हैं पता नहीं चलता और दुःख का प्रत्येक पल वर्षों के समान बीतता है ऐसे में संसारी प्राणी उन दुःखों से छुटकारा पाने के चक्कर में हेय-उपादेय का ज्ञान भी भूल जाता है और सही-गलत किसी भी माध्यम से उनके निवारण का मूल से चूल तक प्रयास करता है, ऐसे में उसे यह भी स्मरण नहीं रहता है कि ऐसा मेरे पूर्वोपार्जित कर्मों की वजह से है अथवा ऐसे विषम समय में देव, धर्म और गुरु की शरण से हम अपने असाता कर्म को साता में परिवर्तित कर सकते हैं।

आज भी मेरे पास दर्शनार्थ आने वाले प्रायः प्रत्येक श्रावक की शारीरिक, मानसिक आदि कई व्यथाएँ रहती हैं ऐसे में मेरी तो सदैव यही प्रेरणा रहती है कि आप भगवान की भक्ति से अपने असाता को साता में परिवर्तित करें। आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी के अनुसार–

**अज्ञानोपास्तिरज्ञानं, ज्ञानं ज्ञानिसमाश्रयः।**
**ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्ध मिदं वचः।।**

अतः जिनेन्द्र भक्ति में तत्पर हम साधु सदा यही प्रेरणा दे सकते हैं। प्राचीन शास्त्र ग्रंथों में अनेकों ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं जब संसारी प्राणी ने इन दुःखों के निवारणार्थ गुरु की शरण लेकर जिनाराधना कर उन दुःखों का शमन किया है। इन्हीं सबको ध्यान में रखते हुए स्वयं मैंने जिनेन्द्रभक्ति हेतु अनेकों विधानों की रचना की है और अपने शिष्यवर्ग को भी यही प्रेरणा देती रहती हूँ। शारीरिक कष्टों के निवारणार्थ मेरे पास कई बार 'सप्तऋषि विधान' की माँग आई अतः मैंने अपनी शिष्या आर्यिका चन्दनामती जी को इस विधान की रचना करने की प्रेरणा प्रदान की और उन्होंने बहुत ही सुन्दर शब्दों में अल्प समय में इस विधान की रचना कर दी। आर्यिका चन्दनामती जी वर्तमान समय में शिष्यवर्ग के लिए न सिर्फ एक आदर्श उदाहरण हैं अपितु मेरे द्वारा निर्देशित प्रत्येक लघु एवं वृहत्कार्य को शिरोधार्य कर उसे पूर्ण समर्पण भाव से पूरे जोश के साथ करके उसे सफलता के शिखर तक पहुँचाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। उनकी आगमोक्त लेखनी में भी भव्यात्मा जीव को सद्राह दिखाने की अद्भुत क्षमता है वे सदैव इसी प्रकार देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुए अपनी आत्मा को शीघ्र ही आत्मोन्नति के चरम शिखर अर्थात् शाश्वत सुख मोक्षप्राप्ति की प्राप्ति करावें, यही उनके लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है और यह विधान प्रत्येक करने-कराने वालों की शारीरिक, मानस, आगंतुक व्याधियों का क्षय कर लौकिक अभ्युदय के साथ आत्मिक अभ्युदय की प्राप्ति में भी सहकारी बने, यही मंगल आशीर्वाद है।

## परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
# श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

**–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

**जन्मस्थान –** टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
**जन्मतिथि –** आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
**जाति –** अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र –** गोयल, **नाम –** कु. मैना
**माता-पिता –** श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
**आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत –** ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
**क्षुल्लिका दीक्षा –** चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम – क्षुल्लिका वीरमती
**आर्यिका दीक्षा –** वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
**साहित्यिक कृतित्व –** अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।
**डी.लिट्. की मानद उपाधि –** सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।
**तीर्थ निर्माण प्रेरणा –** हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा – भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।
**महोत्सव प्रेरणा –** पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
**शैक्षणिक प्रेरणा –** 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
**रथ प्रवर्तन प्रेरणा –** जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

*इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।*



## *पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका*
# श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

**-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)**

**नाम –** प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी
**दीक्षा पूर्व नाम –** ब्र. कु. माधुरी शास्त्री
**जन्मतिथि –** 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)
**जन्मस्थान –** टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
**माता-पिता –** श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन
**भाई –** चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)
**बहन –** आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)
**ब्रह्मचर्य व्रत –** 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।
**धार्मिक अध्ययन –** 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।
**द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत –** सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।
**आर्यिका दीक्षा –** हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।
**प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि –** 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।
**पीएच.डी. की मानद उपाधि –** तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।
**साहित्यिक योगदान –** चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि 150 से अधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि), भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।

# दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

**—जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)**

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

**जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण**—जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

**यात्री सुविधा**—हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

**हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?**—भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।



# वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

## शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)।**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.।**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली।**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई।**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.।**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।**

## परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**

**5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**
**6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
**7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
**8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
**9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**
**10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।**
**11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।**
**12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।**
**13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।**
**14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।**
**15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।**
**16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।**
**17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली।**
**18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली**
**19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमर चंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)**
**20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**

## संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।



18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।

51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन,सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।



84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन ''विमल'' ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
108. सौ. पुष्पा पवन कुमार कासलीवाल, खामगांव (बुलठाणा) महा.।

# विषय-सूची


| क्र.सं. | पूजा | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | सप्तऋषि वंदना | 1 |
| 2. | श्री सप्तऋषि पूजा (समुच्चय पूजा) | 3 |
| 3. | श्री सुरमन्यु महर्षि पूजा | 8 |
| 4. | श्री श्रीमन्यु महर्षि पूजा | 12 |
| 5. | श्री श्रीनिचय महर्षि पूजा | 17 |
| 6. | श्री सर्वसुन्दर महर्षि पूजा | 20 |
| 7. | श्री जयवान् महर्षि पूजा | 23 |
| 8. | श्री विनयलालस महर्षि पूजा | 27 |
| 9. | श्री जयमित्र महर्षि पूजा | 33 |
| 10. | बड़ी जयमाला | 39 |
| 11. | प्रशस्ति | 42 |
| 12. | सप्तऋषि की आरती | 44 |
| 13. | सप्तऋषि व्रत (मृत्युंजय व्रत) | 45 |
| 14. | भजन | 55 |
| 15. | भजन | 56 |




# सप्तऋषि मण्डल विधान का नक्शा

**कुल 7 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं।**

# सप्तऋषि पूजा

## *सप्तऋषि वंदना*

*तर्ज –पंखिड़ा.....*

**वंदना करूँ मैं सप्तऋषिराज की।**
**गगन गमन ऋद्धिधारी मुनिराज की।।वंदना....।।टेक.।।**

**सात भाइयों ने एक साथ दीक्षा ले लिया।**
**विषय भोग हैं असार सबको शिक्षा दे दिया।।**
**पूजा करूँ, भक्ति करूँ, उनके त्याग की।**
**गगन गमन ऋद्धिधारी मुनिराज की।।वंदना.....।।1।।**

**उनके पिता ने भी दीक्षा लेके त्याग किया था।**
**उग्र तप को करके ज्ञान केवल प्राप्त किया था।।**
**पूजा करूँ, भक्ति करूँ, उनके त्याग की।**
**गगन गमन ऋद्धिधारी मुनिराज की।।वंदना.....।।2।।**

**सातों ऋषियों को तपस्या करके ऋद्धियाँ मिलीं।**
**उनकी ऋद्धियों से सारे जग को सिद्धियाँ मिलीं।।**



**पूजा करूँ, भक्ति करूँ, उनके त्याग की।**
**गगन गमन ऋद्धिधारी मुनिराज की।।वंदना.....।।3।।**

**मथुरापुर की महामारी इनसे दूर हुई थी।**
**मथुरापुर में सुख समृद्धि सभी पूर्ण हुई थी।।**
**पूजा करूँ, भक्ति करूँ, उनके त्याग की।**
**गगन गमन ऋद्धिधारी मुनिराज की।।वंदना.....।।4।।**

**इनकी पूजा करने का हृदय में भाव आया है।**
**''चंदनामती'' सभी ने पुण्य क्षण को पाया है।।**
**पूजा करूँ, भक्ति करूँ, उनके त्याग की।**
**गगन गमन ऋद्धिधारी मुनिराज की।।वंदना.....।।5।।**

*(विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

**(पूजा नं. 1)**

# श्री सप्तऋषि पूजा

## (समुच्चय पूजा)

*–स्थापना-(अडिल्ल छंद) –*

**सुरमन्यू श्रीमन्यु आदि ऋषि सात हैं।**
**चारण ऋद्धि समन्वित जो विख्यात हैं।।**
**मथुरापुरि में चमत्कार इनका हुआ।**
**रोग महामारी इन तप से भग गया।।1।।**

*–दोहा –*

**इन सातों ऋषिराज की, पूजा करें महान।**
**रोग शोक की शांति हित, करें प्रथम आह्वान।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक-शंभु छंद –*

**गंगा यमुना अरु सरस्वती, नदियों का जल भर लाए हैं।**
**हो जन्म जरा मृत्यू का क्षय, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।1।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्पूर विमिश्रित केशर घिसकर, स्वर्ण कटोरी लाए हैं।**
**संसार ताप हो जाए नष्ट, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**



**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोती सम उज्ज्वल तंदुल की, थाली भर कर ले आए हैं।**
**हो अक्षय पद की प्राप्ति हमें, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।3।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंपा गुलाब आदिक पुष्पों का, थाल सजाकर लाए हैं।**
**निज कामबाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।4।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**फेनी घेवर आदिक व्यंजन का, थाल सजाकर लाए हैं।**
**निज क्षुधारोग के नाश हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।5।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घृत दीपक कंचन थाली में ले, आरति करने आए हैं।**
**निज मोह तिमिर के नाश हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।6।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंदन कपूर की धूप दहन, अग्नी में करने आए हैं।**
**निज अष्ट कर्म के नाश हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।7।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंगूर आम्र फल आदि विविध, फल थाल सजाकर लाए हैं।**
**शिवपद की केवल प्राप्ति हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।8।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल गंध सुअक्षत पुष्प चरु, वर दीप धूप फल लाए हैं।**
**''चन्दनामती'' इक अर्घ्य थाल, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।**
**सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।**
**आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।9।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–दोहा –*

**कंचन झारी में भरा, यमुना सरिता नीर।**
**शांतीधारा हम करें, सप्तऋषी पद तीर।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**विविध पुष्प की वाटिका, से पुष्पों को लाय।**
**सप्तऋषी के पदनिकट, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य – **ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युआदिसप्तऋषिभ्यो नमः।**



# जयमाला

*–शेरछंद –*

**जय सप्तऋषी चारणादि ऋद्धि के धारी।**
**जय सप्तऋषी सब हुए हैं गगनविहारी।।**
**जय सप्तऋषी रोग शोक दुख हरें सारे।**
**जय सप्तऋषी सुख समृद्धि देते हैं सारे।।1।।**

**नौ लाख वर्ष पूर्व की सच्ची है कहानी।**
**इन सात सगे भाइयों की कथा पुरानी।।**
**जन्मे थे प्रभापुरि में श्रीनन्दन नृपति के घर।**
**अपने पिता के साथ सबने दीक्षा ग्रहण कर।।2।।**

**तप करके बहुत ऋद्धियों को प्राप्त कर लिया।**
**भव भोग तजके आत्मसौख्य प्राप्त कर लिया।।**
**तब इक नये इतिहास से संबंध जुड़ गया।**
**इनकी तपोशक्ती का परिज्ञान मिल गया।।3।।**

**दशरथ के पुत्र रामचन्द्र अवध के राजा।**
**लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न के सबसे बड़े भ्राता।।**
**इनमें से जब शत्रुघ्न बने मथुरा के राजा।**
**मथुरा में फैला महामारी रोग असाता।।4।।**

**मरने लगी जनता तो त्राहि माम् मच गया।**
**शत्रुघ्न का मन देख यह विचलित सा हो गया।।**
**कुछ पुण्य से सप्तर्षि का चौमास हो गया।**
**उन तप से महामारि रोग नाश हो गया।।5।।**

**वे वर्षायोग में भी श्रीविहार करते थे।**
**क्योंकी वे ऋद्धि से धरा पे पग न रखते थे।।**
**जिनकल्पि मुनिशृँखला में गणना है उनकी।**
**शिवधाम प्राप्त सिद्धप्रभु में गणना है उनकी।।6।।**

**मथुरा में उनके तप का चमत्कार हो गया।**
**हर व्यक्ति उनके आगमन से स्वस्थ हो गया।।**
**सातों मुनी निज आत्म में निमग्न रहते थे।**
**राजा प्रजा उन भक्ति में संलग्न रहते थे।।7।।**

**मथुरा से वे मुनी विहार करने लगे जब।**
**शत्रुघ्न ने उनसे विनीत वचन कहे तब।।**
**गुरुदेव! आप यहीं पर निवास कीजिए।**
**फिर से न फैले रोग आशिर्वाद दीजिए।।8।।**

**गुरु ने कहा घर घर में जिनालय बनाइये।**
**गुरुभक्ति करके सर्वसुख समृद्धि पाइए।।**
**उनके प्रभाव से सदा सुभिक्ष रहेगा।**
**जिनधर्म से हि सर्वदा दुर्भिक्ष टलेगा।।9।।**

**मुनि तो वहाँ से बात बताके चले गये।**
**शत्रुघ्न ने घर-घर में जिनालय बना दिये।।**
**घर-घर में सप्तऋषियों की मूर्ति बिठाई।**
**भक्तों ने इनकी भक्ति करके स्वस्थता पाई।।10।।**

**यह भक्तिसुमन थाल है जयमाल के लिए।**
**पूर्णार्घ्य भरा थाल है शिवधाम के लिए।।**
**मुझ मन वचन व तन को अब पवित्र कीजिए।**
**बस ''चन्दनामती'' मुझे भी ऋद्धि दीजिए।।11।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युआदिसप्तऋषिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।



**(पूजा नं. 2)**

# श्री सुरमन्यु महर्षि पूजा

*–स्थापना-(दोहा) –*

**श्री सुरमन्यु ऋषीश की, पूजा करूँ त्रिकाल।**
**आह्वानन स्थापना, करूँ बसो मन आन।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युऋषीश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युऋषीश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युऋषीश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक (सोरठा छंद) –*

**स्वर्णकलश में नीर, लेकर जलधारा करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित चन्दन लाय, गुरुपद में चर्चन करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**उज्ज्वल अक्षत लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प सुगंधित लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**मीठे व्यंजन लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्णिम दीप जलाय, गुरुपद की आरति करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अग्नि में धूप जलाय, गुरुपद का अर्चन करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोक्ष हेतु फल लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्घ्य थाल भर लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लेकर प्रासुक नीर, शांतीधारा मैं करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**विविध पुष्प को लाय, पुष्पांजलि गुरुपद करूँ।**
**श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*–दोहा –*

**सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

*इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

*–शंभु छंद –*

**राजा श्रीनन्दन की रानी, धारिणी पुत्र सुरमन्यु कहे।**
**प्रीतिंकर जिनवर के समीप, दीक्षा ले तपकर ऋद्धि लहें।।**



**उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये नमः।** (9, 27 या 108 बार जाप्य करें)

## जयमाला

*–शंभु छंद –*

**हे मुनिवर! तुम तो श्रीजिनवर के, लघुनंदन कहलाते हो।**
**हे ऋषिवर! तुम तो जिनशासन का, सच्चा रूप दिखाते हो।।**
**हे यतिवर! तुम तो जिनशास्त्रों को, जीवन में अपनाते हो।**
**हे गुरुवर! तुम तो शिवपथ पर चल, शिवपथ को दरशाते हो।।1।।**

**श्री नंदन नृप के प्रथम पुत्र, ने राजमहल का सुख छोड़ा।**
**आतम सुख प्राप्ती हेतु उन्होंने, परिकर से नाता तोड़ा।।**
**जब पिता चले दीक्षा लेने, तब उनको भी वैराग्य हुआ।**
**नश्वर सांसारिक वैभव को, तज शिवपथ में अनुराग हुआ।।2।।**

**श्रीनंदन मुनि ने तप करके, कैवल्यज्ञान को प्राप्त किया।**
**पुत्रों ने भी तप कर करके, नाना ऋद्धी को प्राप्त किया।।**
**उनकी ऋद्धी से अन्य प्राणियों, ने ही लाभ उठाया था।**
**सुरमन्यु ऋद्धिधारी मुनिवर ने, ज्ञानामृत बरसाया था।।3।।**

**वे निजचर्या में रत रहकर, जिनकल्पी मुनि कहलाते थे।**
**चौमास में भी इसलिए कहीं भी, वे विहार कर जाते थे।।**
**उनके विहार से जीवों की, हिंसा न कभी भी होती थी।**
**व्रत समिति गुप्तियों से सदैव, रक्षा उनकी खुद होती थी।।4।।**

**उन श्रीसुरमन्यु मुनी को हम, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।**
**आठों द्रव्यों का थाल सजा, जयमाला गाने आए हैं।।**

**''चन्दनामती'' उन ऋद्धी से, हम लाभ उठाने आए हैं।**
**रत्नत्रय की वृद्धी हेतू, तप शक्ती पाने आए हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

**(पूजा नं. 3)**

# श्रीमन्यु महर्षि पूजा

*–स्थापना-(माता तेरे चरणों में...) –*

**गुरुवर तेरे चरणों में हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**सप्तर्षि में श्रीमन्यू, हैं दुतिय ऋषीश्वर जी।**
**चारणऋद्धी संयुत, उन महामुनीश्वर की।।**
**उनका आह्वानन कर, स्थापन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक (माता तेरे चरणों में....) –*

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**गंगानदि का जल ले, त्रयधारा करना है।**
**निज जन्म जरामृत्यू, को भी क्षय करना है।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**मलयागिरि चन्दन ले, गुरुपद में चर्चन है।**
**भवताप नष्ट होवे, करना मन शीतल है।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**मोतीसम तन्दुल ले, त्रयपुंज चढ़ाना है।**
**दुःखों का क्षय करके, अक्षयपद पाना है।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**फूलों को चुन-चुन कर, उपवन से ले आए।**
**गुरुपद में चढ़ाने से, विषयाशा नश जाए।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**पूरनपोली आदिक, नैवेद्य बना लाए।**
**गुरुपद में चढ़ाने से, क्षुधरोग विनश जाए।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**कंचन की थाली में, घृतदीप बना लाए।**
**गुरुदेव की आरति से, तम मोह विनश जाए।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।



**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**कर्पूर व चन्दन की, हम धूप बना लाए।**
**अग्नी में दहन करके, आतम सुख पा जाएँ।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**अंगूर आम केला आदिक फल ले आए।**
**गुरु सम्मुख अर्पण कर, मुक्तीफल को पाएँ।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।**
**शाश्वत सुख की इच्छा, से अर्घ्य थाल लाए।**
**''चन्दनामती'' उसको, अर्पण कर सुख पाएँ।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुरुपद में झारी से, जलधारा करना है।**
**आतम शांती के लिए, त्रयधारा करना है।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**नाना विध पुष्पों को, अंजलि में भर लाए।**
**गुरुपद पुष्पांजलि कर, गुणपुष्प सुरभि पाएं।।**
**इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।**
**श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*–दोहा –*

**सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

*–शंभु छंद –*

**अपने पितु के संग दीक्षा ले, श्रीमन्यु पुत्र भी मुनी बने।**
**निज आत्मा में तन्मय होकर, तप कर ऋद्धी के स्वामि बने।।**
**उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्री श्रीमन्युमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये नमः।**

## जयमाला

*तर्ज –जहाँ डाल-डाल पर.....*

**श्रीमन्यु मुनीश्वर के सम्मुख पूर्णार्घ्य सजाकर लाए,**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएं।।टेक.।।**
**जिन आगम हैं पाँच प्रमुख, परमेष्ठि नाम से माने।**
**इनमें अरिहंत सिद्ध परमात्मा, नाम से जाते जाने।। नाम से.....**
**आचार्य उपाध्याय साधु कर्म को, नाश परम पद पाएं,**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएं।।1।।**



**मुनिराज साधु परमेष्ठी जब, घोरातिघोर तप करते।**
**ऋद्धियाँ प्राप्त होतीं उनको, फिर क्रम से शिवपद वरते।। फिर क्रम से....**
**हम उनकी पूजा अर्चा करके, भौतिक सुख पा जाएँ,**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।2।।**

**इन ऋद्धिधारियों के क्रम में, सप्तर्षि प्रसिद्ध हुए हैं।**
**राजा श्रीनन्दन और धारिणी माँ के पुत्र हुए हैं।। माँ के.....**
**सातों भाई दीक्षा लेकर आतम में ध्यान लगाएँ,**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।3।।**

**इन सातों में से दुतिय पुत्र, श्रीमन्यु मुनी कहलाए।**
**जो मथुरा नगरी में भ्राता, मुनियों के संग में आए।।मुनियों के...**
**''चन्दनामती'' उन सब मुनियों के पद में शीश झुकाएँ,**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।4।।**

**उन श्रीमुनिवर की पूजा में जयमाल का थाल सजा है।**
**पूर्णार्घ्य समर्पित कर गुरुवर! मन में यह भाव जगा है।। मन में....**
**रत्नत्रय प्राप्ती हेतु भावना वृद्धिंगत कर पाएँ,**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

**(पूजा नं. 4)**

# श्रीनिचय महर्षि पूजा

*–स्थापना-*

**सप्तऋषी में तीसरे, हैं श्रीनिचय ऋषीश।**
**उनकी पूजन हेतु मैं, नमूँ नमाकर शीश।।1।।**
**आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।**
**करके मन में भावना, है हो मम कल्याण।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक (स्रग्विणी छंद) –*

**स्वर्णझारी में गंगा नदी नीर ले, गुरु के पद धार दें जन्ममृत्यू टले।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभि चंदन को गुरुपद में चर्चन करूँ, होवे भवताप विध्वंस शिवपद वरूँ।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ्र अक्षत अखंडित लिया पुंज है, गुरुचरण में चढ़ा पाऊँ गुणकुंज मैं।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**कुंद चंपा चमेली लिया पुष्प है, गुरुचरण में समर्पण करूँ पुष्प है।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**थाल मिष्टान्न पकवान्न के लायके, गुरुचरण पूजहूँ मैं निकट आयके।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**रत्नदीपक लिया है कनक थाल में, आरती अब उतारूँ झुका भाल मैं।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप मलयागिरी की सुगंधित लिया, अग्नि में दहके आत्मा सुगंधित किया।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**आम अंगूर बादाम फल ले लिया, मोक्षफल हेतु गुरुपद में अर्पण किया।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**आठों द्रव्यों सहित अर्घ्य ले थाल में, 'चन्दनामति' समर्पित है गुरुपाद में।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतिधारा करूँ श्रीगुरू पदकमल, विश्व की शांति हेतू करूँ पद नमन।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**करके पुष्पांजली श्रीगुरू पदकमल, आत्मगुण प्राप्ति हेतू करूँ पद नमन।**
**श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*दोहा –* **सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

*शंभु छंद –* **श्री निचय मुनी के तन में भी, तप से ऐसी शक्ती आई।**
**अपने भ्राताओं के संग उनने, भी चारणऋद्धी पाई।।**
**उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीनिचयमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्री श्रीनिचयमहर्षये नमः।**

## जयमाला

*तर्ज –तन डोले.....*

**श्रीनिचय मुनीश्वर, के चरणों में, वन्दन शत शत बार है,**
**पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।टेक.।।**

**प्रभापुरी नगरी में राजा श्रीनंदन रहते थे।**
**उनकी रानी ने क्रम क्रम से सात पुत्र जन्मे थे।।उन्होंने सात पुत्र.....**
**उनमें से ही, श्रीनिचय नाम के, पुत्र तृतिय मुनिराज हैं,**
**पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।1।।**

**एक बार प्रीतिंकर मुनि को केवलज्ञान हुआ था।**
**धनद ने उनकी गंधकुटी का, झट निर्माण किया था।। गुरूजी झट निर्माण....**
**उनके दर्शन से, सभी भ्रात के, हृदय जगा वैराग्य है,**
**पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।2।।**

**सप्तऋषी की सत्य कथा यह, रामायण में लिखी है।**
**इनके तप की शक्ति सभी को, मथुरापुरि में दिखी है।। गुरूजी मथुरा....**
**शत्रुघ्नराज ने, गुरु चरणों में, नमन किया शत बार है,**
**पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।3।।**

**उन मुनिवर श्रीनिचय के पद में, अर्घ्य सजाकर लाये।**
**यही 'चन्दनामती' भाव हैं, रत्नत्रय मिल जाये।। गुरुजी रत्नत्रय.....**
**उग्रोग्र तपस्या, जीवन में, कर सकूँ यही बस सार है,**
**पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रीनिचयमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।



**(पूजा नं. 5)**

# श्रीसर्वसुन्दर महर्षि पूजा

*–स्थापना-(अडिल्ल छंद) –*

**रामचन्द्र के समय सप्तऋषि थे हुए।**
**जिनके तप से जन जन मन पावन हुए।।**
**उनमें चौथे ऋषी सर्वसुन्दर कहे।**
**उनकी पूजा हेतू आह्वानन करें।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक (दोहा) –*

**सुरसरिता जल से करूँ, गुरुपद में जलधार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**शीतल चन्दन से करूँ, गुरुपूजन सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत पुंजों से करूँ, गुरुपूजन सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्पमाल लेकर करूँ, गुरुपूजन सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्यंजन सरस बनाय के, अर्पूं गुरुपद सार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कंचन दीपक से करूँ, गुरु आरति सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप दहन करके करूँ, गुरुपूजन सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाना विध फल से करूँ, गुरुपूजन सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्घ्य 'चन्दनामति' लिया, गुरुपूजन हित आज।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतीधारा मैं करूँ, गुरुपद में सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**पुष्पांजलि को मैं करूँ, गुरुपद में सुखकार।**
**ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*दोहा* – **सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

*शंभु छंद* –**तन से सुन्दर मन से सुन्दर था, रूप सर्वसुन्दर ऋषि का।**
**इसलिए दूर कर सके घोर-उपसर्ग वे मथुरा नगरी का।।**
**उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये नमः।**



## जयमाला

*तर्ज –जरा सामने तो.....*

**सप्त ऋषियों की करूँ मैं अर्चना, उनके पद की करूँ मैं वंदना।**
**सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।टेक.।।**

**देव शास्त्र गुरु हैं इस जग में, तीन रतन माने जाते।**
**इनके आराधन से जग में, तीन रतन पाए जाते।।**
**तीनों रत्नों की करूँ अभ्यर्थना, सप्तऋषियों की करूँ मैं अर्चना।**
**सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।1।।**

**बृहस्पति गुरु भी श्रीगुरु की, महिमा नहिं कह सकते हैं।**
**जिनवर की महिमा हम गुरुओं, के द्वारा ही सुनते हैं।।**
**उन्हीं गुरुओं की करूँ अभ्यर्थना, सप्तऋषियों की करूँ मैं अर्चना।**
**सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।2।।**

**तप करके उन सब ऋषियों ने, ऋद्धि अनेकों पाई थीं।**
**उनमें से चारण ऋद्धी की, महिमा प्रमुख दिखाई थी।।**
**उस ऋद्धि की करूँ अभ्यर्थना, सप्त ऋषियों की करूँ मैं अर्चना।**
**सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।3।।**

**उनकी पूजन करके अब, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।**
**पद अनर्घ्य ''चन्दनामती'' पाने के लिए हम आए हैं।।**
**उसी पद की करूँ अभ्यर्थना, सप्तऋषियों की करूँ मैं अर्चना।**
**सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

**(पूजा नं. 6)**

# श्री जयवान् महर्षि पूजा

*–स्थापना-(अडिल्ल छंद) –*

**श्री जयवान् ऋषी की जय जय कीजिए।**
**अष्ट द्रव्य से उनकी पूजन कीजिए।।**
**पूजन से पहले स्थापन कीजिए।**
**निज मन में उनका आह्वानन कीजिए।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक (अडिल्ल छंद) –*

**स्वर्णकलश में प्रासुक नीर भरा लिया।**
**जन्म मृत्यु क्षय हित गुरुपद धारा किया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंदन घिस कर स्वर्ण कटोरी में लिया।**
**भव आतप नाशन हित गुरुपद चर्चिया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्णथाल में अक्षत धोकर ले लिया।**
**अक्षय पद हित गुरुपद पुंज चढ़ा दिया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।



**स्वर्णपात्र में विविध पुष्प चुन कर लिया।**
**कामबाण नाशन हित, गुरुपद अर्पिया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्तम व्यंजन स्वर्ण थाल में भर लिया।**
**क्षुधा नाश हित गुरुपद में अर्पण किया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्णपात्र में घृत का दीप जला लिया।**
**मोह नाश हित गुरुवर की आरति किया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप सुगंधित गुरुपूजन हित ले लिया।**
**अग्नी में कर दहन कर्म नाशन किया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्णपात्र में उत्तम-उत्तम फल लिया।**
**शिवपद हेतू गुरुपद में अर्पण किया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वर्णथाल में अर्घ्य ''चन्दनामति'' लिया।**
**पद अनर्घ्य हित गुरुपद में अर्पित किया।।**

**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कंचन झारी में प्रासुक जल ले लिया।**
**विश्वशांति हित गुरुपद में धारा किया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**हस्तअंजुली में पुष्पों को भर लिया।**
**पुष्पांजलि कर मन में गुरुगुण भर लिया।।**
**सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।**
**उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*–दोहा –*

**सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

*–शंभु छंद –*

**शत्रुघ्न ने मथुरा के राजा, मधुसुन्दर को जब मार दिया।**
**तब देव विक्रिया को जयवान्, सहित सब ऋषि ने शांत किया।।**
**उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीजयवानमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये नमः।**



## जयमाला

*तर्ज –बजे कुण्डलपुर में बधाई.....*

**नाम जप ले तू गुरुनाम जप ले-2, काम सारे बन जाएंगे, नाम जप ले।।टेक.।।**

**सात ऋषियों का नाम सुना है।**
**उनके तप का भी नाम सुना है।।**
**इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।1।।**

**इन ऋषियों में पंचम ऋषि थे।**
**श्रीजयवान् जी महर्षि थे।।**
**इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।2।।**

**ये ऋद्धियों के थे स्वामी।**
**सब सिद्धियों के थे स्वामी।।**
**इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।3।।**

**इनके चरणों में शीश झुकाओ।**
**इनकी पूजा का थाल सजाओ।।**
**इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।4।।**

**इनकी जयमाल मिलकर गाओ।**
**''चन्दनामति'' अर्घ्य चढ़ाओ।।**
**इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

## (पूजा नं. 7)

# श्री विनयलालस महर्षि पूजा

*–स्थापना –*

*तर्ज-परदेशी-परदेशी.....*

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**जिनशास्त्रों में सप्तऋषी का नाम है.....नाम है।**
**जिनके पद में करते सभी प्रणाम हैं।।-2**
**उनमें छठे मुनिवर, नाम विनयलालस**
**करें हम उन्हीं का, आज मिल करके अर्चन।।**

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।।1।।**

**आह्वानन स्थापन करके वन्दना.....वंदना।**
**पुनः अष्ट द्रव्यों से कर लें अर्चना।।-2**
**यही विधि करके, मन में उन्हें धरके,**
**करें हम गुरू का, आज मिल करके अर्चन।।**

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

*–अष्टक –*

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**शीतल प्रासुक जल ले, जलधारा करूँ.....धारा करूँ।**
**जन्म मृत्यु नश जाय, यही आशा करूँ।।-2**



**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**चंदन घिसकर गुरुपद में चर्चन करूँ.....चर्चन करूँ।**
**भव आतप नाशन हेतू, अर्चन करूँ।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**मोती सम अक्षत से, गुरुपद पूजहूँ....पूजहूँ।**
**शाश्वत अक्षय पद हेतु, गुरु को नमूँ।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**श्वेत सुगंधित पुष्पमाल गुरुपद धरूँ.....पद धरूँ।**
**काम बाण हो नाश, यही आशा करूँ।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**पकवानों का थाल गुरू के पद धरूँ.....पद धरूँ।**
**क्षुधारोग नश जाय, यही आशा करूँ।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**घृत का दीप जलाय, गुरू आरति करूँ....आरति करूँ।**
**मोहतिमिर नश जाय, यही आशा करूँ।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**ताजी धूप बनाय, अग्नि में है दहन.....है दहन।**
**गुरुपूजन से होता, कर्मों का हवन।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**



**फल का थाल गुरू चरणों में अर्पण है.....अर्पण है।**
**मोक्ष महाफल प्राप्ती हेतु समर्पण है।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।**
**पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।**
**ऋषिवर जी..।।टेक.।।**

**अर्घ्य थाल गुरुपद में करना अर्पण है.....अर्पण है।**
**करूँ ''चन्दनामति'' गुरुपद में वंदन मैं।।-2**

**गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।**
**ऋषिवर जी...।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–दोहा –*

**शांतीधारा के लिए, जलयुत कलश मंगाय।**
**राज्य राष्ट्र नृप के लिए, है यह मंगल भाव।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**विश्व एकता के लिए, पुष्पांजलि का भाव।**
**मैत्री फैले जगत में, आपस में सौहार्द।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*–दोहा –*

**सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

*–शंभु छंद –*

**अत्यन्त विनयवृत्ती वाले, मुनिराज विनयलालस जी थे।**
**अपने पितु मुनिवर श्रीनंदन के, साथ तपस्या में रत थे।।**
**उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीविनयलालसमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये नमः।**

## जयमाला

*–शंभु छंद –*

**गुरुवर! ऋषिवर! यतिवर! मुनिवर! तुम शिवपथ के दिग्दर्शक हो।**
**संसार में भी रह करके तुम संसार के प्रति अनुरक्त न हो।।**
**तुम राजाओं के भी राजा महाराज तभी कहलाते हो।**
**तुम शिवपथ के अनुगामी बन सबको शिवपथ बतलाते हो।।1।।**

**ऋषियों में शिरोमणि सप्तऋषी जो आगम में बतलाए हैं।**
**उनमें हि विनयलालस ऋषि को हम अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।**
**मथुरा नगरी में इन सबने इक साथ प्रभाव दिखाया था।**
**देवों की शक्ति पराजित कर सब रोग को दूर भगाया था।।2।।**

**शत्रुघ्न को चिंतित देख मुनीश्वर ने उनको उपदेश दिया।**
**हे राजन्! कुछ दिन में कलियुग आएगा यह संदेश दिया।।**
**उस कलियुग में यह जिनशासन कुछ कम महिमा दिखलाएगा।**
**अज्ञानी क्रूर प्राणियों से मिथ्यात्वतिमिर छा जाएगा।।3।।**

**सच्चे गुरुओं के दर्शन तब दुर्लभता से मिल पाएंगे।**
**यदि मिल जावें तो मूढात्मन मूल्यांकन नहिं कर पाएंगे।।**
**मुनि बोले, हे शत्रुघ्न! आज तुम हितकारी इक नियम करो।**
**आहारदान सच्चे गुरुओं को देने का संकल्प करो।।4।।**



**इस दान को देने से गृहस्थ जीवन सच्चा सार्थक होगा।**
**मथुरा नगरी के नर-नारी का जीवन मंगलमय होगा।**
**शत्रुघ्न ने इस गुरुआज्ञा का पालन करके दिखलाया था।**
**जिनमंदिर कई बनाकर उनमें सप्तऋषी पधराया था।।5।।**

**उपकार सप्तऋषियों का उनके मन में बहुत समाया था।**
**श्रावक कर्तव्यों का पालन करना गुरु ने सिखलाया था।।**
**इस कलियुग में उनकी भविष्यवाणी बिल्कुल सच दिखती है।**
**जिनवर वाणी में पूर्ण रुची विरले लोगों की दिखती है।।6।।**

**मुनिराज विनयलालस के संग सातों ऋषियों को नमन करूँ।**
**पूर्णार्घ्य चढ़ा ''चन्दनामती'' गुरुचरण सदा स्मरण करूँ।।**
**मेरे भव भव के पाप कटें गुरुपूजन का फल यही मिले।**
**सम्यक् तप करके मोक्ष लहूँ ऐसी अन्तर में ज्योति जले।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

**(पूजा नं. 8)**

# श्री जयमित्र महर्षि पूजा

*तर्ज –झुमका गिरा रे.....*

**पूजन करो जी,**

**जयमित्र ऋषी के तप व त्याग की पूजन करो जी।।टेक.।।**
**तप करके जिनने अपनी काया कुन्दन सम कर ली थी।**
**नाना ऋद्धि समन्वित होकर आतम सिद्धी वर ली थी।।**
**अपने सभी भाइयों के संग गगन गमन वे करते थे।**
**वर्षायोग के बीच में भी वे विचरण कभी भी करते थे,**
**विचरण कभी भी करते थे।।**

**पूजन करो जी,**

**जयमित्र ऋषी के तप व त्याग की पूजन करो जी।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक–

*तर्ज –ए री छोरी बांगड़ वाली.....*

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**जन्म मृत्यु के नाशन हेतू, गुरूपद का प्रक्षालन है।**
**शीतल जल से पूजन कर लें, श्रीजयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**भव आतप विध्वंसन हेतू, गुरुपद चंदन चर्चन है।**
**चंदन लेकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।



**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**अक्षयपद की प्राप्ती हेतू, अक्षत पुंज समर्पित हैं।**
**तंदुल लेकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**कामबाण विध्वंसन हेतू, पुष्पमाल गुरुपद धरना।**
**विविध पुष्प से पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**क्षुधारोग विध्वंसन हेतू, पकवानों का थाल भरा।**
**नैवेद्यों से पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**मोहतिमिर विध्वंसन हेतू, गुरुवर की आरति कर लें।**
**दीप जलाकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**अष्टकर्म विध्वंसन हेतू, ताजी धूप चढ़ाना है।**
**धूप जलाकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**मोक्ष महाफल प्राप्ती हेतू, गुरुपद में फल थाल धरा।**
**विविध फलों से पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**पद अनर्घ्य की प्राप्ति ''चन्दनामती'' हमें अब करना है।**
**अर्घ्य थाल ले पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**आत्मशांति अरु विश्वशांति के, लिए प्रार्थना करना है।**
**शांतिधार कर पूजन कर लें, श्रीजयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।**
**गुण पुष्पों की प्राप्ति हेतु, गुरुवर से प्रार्थना करना है।**
**पुष्पांजलि कर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## *अथ प्रत्येक अर्घ्य*

*–दोहा –*

**सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
**पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।**

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

*–शंभु छंद –*

**अंतिम थे श्रीजयमित्र महर्षी, मित्रभावना से संयुत।**
**उग्रोग्र तपस्या करने से, हो गये सर्वऋद्धीसंयुत।।**
**उन सर्वौषधि आदिक ऋद्धीयुत, मुनि की पूजा सुखकारी।**
**उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीजयमित्रमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

**श्रीसुरमन्यू श्रीमन्यू अरु, श्रीनिचय सर्वसुन्दर मुनिवर।**
**जयवान विनयलालस एवं, जयमित्र ऋद्धिसंयुत ऋषिवर।।**



**ये सातों भाई सप्तऋषी, कहलाए हैं जिनशासन में।**
**इनके चरणों में अर्घ्य चढ़ाकर, पा जाऊँ शिवसाधन मैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री सुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्र नाम सप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

**मथुरा नगरी की पावन भू को, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।टेक.।।**

**राजा मधुसुन्दर मथुरा में, सुखपूर्वक राज्य चलाते थे।**
**वे लंकापति रावण के, जामाता प्रसिद्ध कहलाते थे।।**
**रामायण जैन के सत्य कथानक को बतलाने आए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।1।।**

**अपने भाई शत्रुघ्न से इक दिन, रामचन्द्र ने पूछ लिया।**
**किस नगरी का तुम राज्य, चाहते हो बोलो मेरे भैय्या।।**
**मथुरा नगरी का राज्य सुनो, शत्रुघ्न माँग हर्षाए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।2।।**

**समझाया राम व लक्ष्मण ने, हे भ्रात! वहाँ तुम मत जाओ।**
**हम सबके शत्रू मधुसुन्दर, राजा को तुम मत भड़काओ।।**
**फिर भी शत्रुघ्न जबर्दस्ती, मथुरा नगरी में आए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।3।।**

**सेना सह कर आक्रमण उन्होंने, मधुसुन्दर को घेर लिया।**
**मधुसुन्दर ने रणभूमि में ही, वैराग्य भाव को धार लिया।।**
**यह दृश्य देख देवों ने नभ से, पुष्प रतन बरसाए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।4।।**

**मधुसुन्दर नृप का शूलरत्न, शत्रुघ्न नृपति ने प्राप्त किया।**
**चमरेन्द्र ने क्रोधित हो मथुरा को, महामारियुत बना दिया।।**

**ऐसे संकट में सप्तऋषी, मथुरानगरी में आए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।5।।**

**उनकी सर्वौषधि ऋद्धी से, मथुरा का संकट भाग गया।**
**मथुरा की सारी जनता ने, गुरु का प्रभाव स्वीकार किया।।**
**गुरुआज्ञा से शत्रुघ्न वहाँ, जिनमंदिर खूब बनाए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।6।।**

**इस घटना के पश्चात् वहाँ, जम्बूस्वामी को मोक्ष हुआ।**
**''चन्दनामती'' मथुरा चौरासी, नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हुआ।।**
**उस पावन तीर्थ धरा को हम, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।**
**चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।7।।**

ॐ ह्रीं महामारीरोगनिवारणस्थलमथुरापुर तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये नमः।**

## जयमाला

*तर्ज –चांदनपुर के गाँव में.....*

**अष्ट दरब का थाल ले, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।**
**जयमित्र ऋषी के पद में, सातों ऋषियों के सुमिरन में।।अष्ट दरब.।।टेक.।।**

**भव भोगों को तजने का, जब भाव हृदय में आता है।**
**तब संसारी प्राणी गुरु को, अपने भाव बताता है।**
**शुभ भावों का थाल ले, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।1।।**

**दीक्षा धारण करके प्राणी, घोर तपस्या करता है।**
**भव भव में संचित कर्मों का, नाश स्वयं वह करता है।।**
**उन्हीं तपस्वी के पद में, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।2।।**



**तप के द्वारा ही मुनियों में, ऋद्धि प्रगट हो जाती हैं।**
**उनके द्वारा ही कितनों को, शांति प्राप्त हो जाती है।।**
**ऋद्धि सहित मुनि के पद में, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।3।।**

**मथुरा नगरी में सातों ऋषि, एक साथ ही आए थे।**
**नृप शत्रुघ्न सहित मथुरा के, नर नारी हर्षाए थे।।**
**उन सप्त ऋषि के पद में, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषि के पद में।।4।।**

**उनकी ही ''चन्दनामती'', जयमाल का थाल सजाया है।**
**ऋद्धि सहित गुरुओं के गुण, गाने का भाव बनाया है।।**
**स्वर्णिम अर्घ्य बनाय के, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीजयमित्रमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।**
**इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।**

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

# बड़ी जयमाला

*तर्ज –माई रे माई.....*

गुरुभक्ती के लिए अर्घ्य का, थाल सजाकर लाए।
सप्तऋषी की पूजाकर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।टेक.।।

राजा दशरथ और राम के, युग की यह घटना है।
सात सगे भ्राताओं के, तप ऋद्धि की यह घटना है।।
इनके तप का अनुमोदन कर, पुण्य कमाने आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।1।।

नगर प्रभापुर में राजा, श्रीनन्दन जी रहते थे।
उनकी रानी ने क्रम क्रम से, सात पुत्र जनमे थे।।
सातों सुत पितु के संग दीक्षा, ले मन में हर्षाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।2।।

पिता ने केवलज्ञान प्राप्त कर, मोक्षधाम को पाया।
इन सातों मुनियों ने तपकर, नव इतिहास बनाया।।
कई ऋद्धियों के स्वामी बन, जग के कष्ट मिटाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।3।।

एक बार मथुरा में इनका, वर्षायोग हुआ था।
रोग महामारी जहाँ फैला, चारों ओर हुआ था।।
जनता के ही पुण्ययोग से, गुरु चौमास रचाएँ।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।4।।
इनकी ही इक बात सुनो, वे ऋद्धीधारी मुनिवर।



वर्षायोग के मध्य पहुँच गए, नगरि अयोध्या पुरिवर।।
अर्हद्दत्त सेठ तब इनका, विनय नहीं कर पाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।5।।

सेठ ने सोचा ये मुनि, आगमनिष्ठ नहीं लगते हैं।
वर्षायोग में चूँकी स्वैराचार गमन करते हैं।।
इसीलिए आहार हेतु ये, आज मेरे घर आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।6।।

फिर भी सेठ की पुत्रवधू ने, गुरुओं को पड़गाया।
नवधाभक्ती करके उन, सबको आहार कराया।।
कर आहार वे सातों ऋषिवर, जिनमंदिर में आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।7।।

द्युति आचार्य वहाँ पर अपने, संघ सहित स्थित थे।
ऋद्धि सहित मुनियों को लख, वे खड़े हुए भक्ती से।।
गुरु को नमस्कार करते लख, शिष्य बहुत अकुलाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।8।।

सातों ऋषि आकाशमार्ग से, उड़कर चले गए जब।
मुनि शिष्यों ने गुरु अविनय का, प्रायश्चित्त लिया तब।।
अर्हद्दत्त सेठ भी तत्क्षण, जिनमंदिर में आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।9।।

द्युति आचार्य ने कहा सेठ से, बड़े भाग्यशाली हो।
सेठ ने रोकर कहा पूज्यवर, मुझको प्रायश्चित दो।।

**कैसे अब उन महामुनीश्वर का दर्शन हम पाएँ।**
**सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।**
**जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।10।।**

**मथुरा जाकर सप्तऋषी का, वंदन अब करना है।**
**गुरुवर बोले यही श्रेष्ठिवर! प्रायश्चित करना है।।**
**तभी सेठ गुरुवंदन करने, मथुरापुरि में आए।**
**सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।**
**जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।11।।**

**इन्हीं सप्तऋषियों की आज भी, प्रतिमाएँ बनती हैं।**
**जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, निधियाँ ये मिलती हैं।।**
**भौतिक संपति हेतु भक्तजन, पूजा इनकी रचाएँ।**
**सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।**
**जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।12।।**

**गणिनी ज्ञानमती की शिष्या, नाम 'चन्दनामति' है।**
**पूर्ण अर्घ्य का थाल किया, सप्तर्षि चरण अर्पित है।।**
**जब तक मुक्ति मिले तब तक, गुरुभक्ति सदा मन भाए।**
**सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।**
**जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।13।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युश्रीमन्युश्रीनिचयश्रीसर्वसुन्दरश्रीजयवानश्रीविनयलालस-श्रीजयमित्रनाम ऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**



# प्रशस्ति

**तीर्थंकर श्री शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभू को करूँ नमन।**
**उनकी पावन जन्मभूमि हस्तिनापुरी को शत वन्दन।।**
**जम्बूद्वीप सुमेरुगिरी के जिनचैत्यालय को वन्दन।**
**तेरहद्वीप व तीन लोक की सब प्रतिमाओं को वन्दन।।1।।**

**प्रथमाचार्य शांतिसागर गुरुवर के पद में करूँ नमन।**
**उनके पट्टाचार्य प्रथम आचार्य वीरसागर को नमन।।**
**वीरसिंधु की शिष्या गणिनी ज्ञानमती माता को नमन।**
**बालयोगिनी प्रथम बनीं जो उनके श्रीचरणों में नमन।।2।।**

**इनसे दीक्षा-शिक्षा पाकर मेरा जीवन हुआ सफल।**
**नाम ''चन्दनामती'' प्राप्तकर मैंने पावन किया जनम।।**
**इनकी सन्निधि में मेरा चलता रत्नत्रय आराधन।**
**गुरु की छत्रच्छाया में निर्विघ्न चले ज्ञानाराधन।।3।।**

**इस सप्तर्षि विधान की रचना मैंने की गुरुभक्ती से।**
**ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से पाई शक्ती है।।**
**जम्बूद्वीप में सप्तऋषी की प्रतिमाएँ खड्गासन हैं।**
**इसीलिए उनका विधान लिखने को है आया मन में।।4।।**

**श्री सुभाष[1]चंद श्रावकरत्न ने किया निवेदन भी मुझसे।**
**सप्तऋषी मण्डल विधान रचिए प्रेरणा मिली उनसे।।**
**गुरुआज्ञा से इसीलिए सप्तर्षि विधान बनाया है।**
**उन जैसी तपशक्ति मिले यह भाव हृदय में आया है।।5।।**

**वीर संवत् पच्चिस सौ छत्तिस श्रावण शुक्ला ग्यारस है।**
**मुझको दीक्षा लेकर पूरे हुए वर्ष जब इक्किस हैं।।**
**बाइसवीं इस दीक्षा तिथि में मैंने पूर्ण किया इसको।**
**जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में किया समर्पित श्रीगुरु को।।6।।**

1. टिकैतनगर-उ.प्र. निवासी, मेरे गृहस्थावस्था के भ्राता हैं।

**मथुरा नगरी की महामारी दूर हुई जिनके तप से।**
**भाव यही हर मानव होवे स्वस्थ सप्तऋषि पूजन से।।**
**भारत की धरती पर जब दुर्भिक्ष आदि संकट आवें।**
**इस पूजन को सभी जगह करके सुभिक्ष मंगल पावें।।7।।**

**सप्तऋषी प्रतिमा बनवाकर जिनमंदिर में पधराओ।**
**उनका कर अभिषेक सदा गंधोदक घर में ले आओ।।**
**नेत्र आदि में उसे लगाकर घर में उसको छिड़काओ।**
**सप्तऋषी का व्रत भी करके मनवांछित फल पा जाओ।।8।।**

**इस विधान से यदि कुछ प्राणी स्वस्थ सुखी बन पाएंगे।**
**तब समझो सम्पूर्ण मनोरथ सफल मेरे हो जाएंगे।।**
**सप्तऋषी से यही प्रार्थना है अनुकम्पा बनी रहे।**
**विश्व धरा पर सुख शांती के साथ समृद्धी बनी रहे।।9।।**

# आरती सप्तऋषि की

मैं तो आरति उतारूँ रे, सप्त ऋषीश्वर की।
जय-जय-जय सप्तऋषि, जय जय जय।।टेक.।।

पहले मुनिवर हैं सुरमन्यु, चारण ऋद्धीधर.....चारणऋद्धीधर।
दूजे ऋषिवर हैं श्रीमन्यु, जन जन के हितकर.....जन जन के।
इनको नमस्कार करूँ, इनका सत्कार करूँ, इनको निहारूँ रे,
हो प्यारा-प्यारा मुखड़ा निहारूँ रे.....मैं तो.....।।1।।

श्रीनिचय मुनीश्वर तृतीय, तपलक्ष्मी भर्ता.....तपलक्ष्मी भर्ता।
सर्वसुन्दर ऋषीश्वर चतुर्थ, आतमसुखकर्ता.....आतमसुखकर्ता।।
भक्ति करूँ झूम-झूम, नृत्य करूँ घूम-घूम, जीवन सुधारूँ रे,
हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारूँ रे.....मैं तो.....।।2।।

श्री जयवान मुनी पंचम, हैं पंचमगतिदाता.....पंचमगतिदाता।
विनयलालस व जयमित्र नाम, गुरुवर सुखदाता.....गुरुवर सुखदाता।
सातों ये ऋद्धि धरें, विहरण इक संग करें, प्रतिमा निहारूँ रे।
हो पावन इनकी प्रतिमा निहारूँ रे.....मैं तो.....।।3।।

मथुरापुर की महामारी, दूर हुई इनसे.....दूर हुई इनसे।
राजा शत्रुघ्न की नगरी, पवित्र हुई इनसे.....पवित्र हुई इनसे।।
''चन्दनामति'' भक्ति करूँ, काया में शक्ति भरूँ, पल-पल पुकारूँ मैं,
हो इन्हीं को पल-पल पुकारूँ रे.....मैं तो.....।।4।।

# सप्तर्षि व्रत (मृत्युंजय व्रत)

आज से लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व श्री रामचन्द्र के समय मथुरानगरी के उद्यान में सात महर्षि महामुनि पधारे थे। वहाँ वर्षायोग स्थापित किया था, उनके शरीर से स्पर्शित हवा के प्रभाव से वहाँ पर दैवी प्रकोप–महामारी रोग कष्ट दूर हुआ था। तभी से लेकर आज तक इन सप्तर्षि मुनियों की प्रतिमाएँ मंदिरों में विराजमान कराने की परम्परा चली आ रही है और इनका अभिषेक-भक्ति आदि पूजा की जाती है।

**इस व्रत की विधि–**आषाढ़ शु. चतुर्दशी से श्रावण कृष्णा पंचमी तक सात दिन यह व्रत करना चाहिए। इन व्रतों के दिन सप्तर्षि मुनियों की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके उन्हीं की पूजा करें। मंत्र निम्न प्रकार हैं–

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं अर्हं सुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम सप्त महर्षिभ्यो नमः।**

प्रत्येक दिन के प्रत्येक पृथक्-पृथक् मंत्र–

**1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुरमन्युमहर्षये नमः।**
**2. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रीमन्युमहर्षये नमः।**
**3. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिचयमहर्षये नमः।**
**4. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसर्वसुंदरमहर्षये नमः।**
**5. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजयवानमहर्षये नमः।**
**6. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविनयलालसमहर्षये नमः।**
**7. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजयमित्रमहर्षये नमः।**

इन सप्तर्षियों की कथा पढ़ें। सात वर्ष तक यह व्रत करके उद्यापन में सप्तर्षियों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराकर मंदिरों में, गृह चैत्यालयों में विराजमान करें। यथाशक्ति मुनि-आर्यिका आदि को आहारदान आदि देकर दीन-दुखियों को भी करुणादान, औषधिदान आदि देवें।

इस व्रत को लगातार सात वर्ष करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से अकालमृत्यु को दूर कर परम्परा से मृत्युंजयपद मोक्षपद भी प्राप्त किया जा सकता है। जीवन में आने वाले अनेक संकट दूर होंगे। अनेक प्रकार के एक्सीडेंट, रोग, शोक, संकट दूर होंगे। इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

यदि आप मथुरा तीर्थ नहीं जा सकते हैं, तो अन्य किसी भी तीर्थ की वंदना



करके व्रत पूर्ण करें।

**सप्तर्षियों की कथा–**अयोध्या के राजदरबार में एक दिन महाराजा श्री रामचन्द्र ने अपने भाई शत्रुघ्न से कहा–

"शत्रुघ्न! इस तीन खण्ड की वसुधा में तुम्हें जो देश इष्ट हो, उसे स्वीकृत कर लो। क्या तुम अयोध्या का आधा भाग लेना चाहते हो? या उत्तम पोदनपुर को? राजगृह नगर चाहते हो या मनोहर पौंड्र नगर को?"

इत्यादि प्रकार से श्री राम और लक्ष्मण ने सैकड़ों राजधानियाँ बताईं, तब शत्रुघ्न ने बहुत कुछ विचार कर मथुरा नगरी की याचना की। तब श्री राम ने कहा–

"मथुरा का राजा मधु है, वह हम लोगों का शत्रु है, यह बात क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है? वह मधु रावण का जमाई है और चमरेन्द्र ने उसे ऐसा शूलरत्न दिया हुआ है जो कि देवों के द्वारा भी दुर्निवार है, वह हजारों के भी प्राण हरकर पुनः उसके हाथ में आ जाता है। इस मधु का लवणार्णव नाम का पुत्र है वह विद्याधरों के द्वारा भी दुःसाध्य है, उस शूरवीर को तुम किस तरह जीत सकोगे?"

बहुत कुछ समझाने के बाद भी शत्रुघ्न ने यही कहा कि–

"इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ? आप तो मुझे मथुरा दे दीजिए। यदि मैं उस मधु को मधु के छत्ते के समान तोड़कर नहीं फेंक दूँ तो मैं राजा दशरथ के पुत्र होने का ही गर्व छोड़ दूँ। हे भाई! आपके आशीर्वाद से मैं उसे दीर्घ निद्रा में सुला दूँगा।"

इसके बाद शत्रुघ्न ने जिनमंदिर में जाकर सिद्ध परमेष्ठियों की पूजा करके घर जाकर भोजन किया पुनः माता के पास पहुँचकर प्रणाम करके मथुरा की ओर प्रस्थान के लिए आज्ञा माँगी। माता सुप्रभा ने पुत्र के मस्तक पर हाथ फेरकर उसे अपने अर्धासन पर बिठाकर प्यार से कहा–

"हे पुत्र! तू शत्रुओं को जीतकर अपना मनोरथ सिद्ध कर। हे वीर! तुझे युद्ध में शत्रु को पीठ नहीं दिखाना है। हे वत्स! जब तू युद्ध में विजयी होकर आयेगा, तब मैं सुवर्ण के कमलों से जिनेन्द्रदेव की परम पूजा करूँगी।"

बहुत बड़ी सेना के साथ शत्रुघ्न ने क्रम-क्रम से पुण्यभागा नदी को पार कर आगे पहुँचकर अपनी सेना ठहरा दी और गुप्तचरों को मथुरा भेज दिया। उन लोगों ने आकर समाचार दिया–

"देव! सुनिए, यहाँ से उत्तर दिशा में मथुरा नगरी है वहाँ नगर के बाहर एक सुन्दर राजउद्यान है। इस समय राजा मधुसुन्दर अपनी जयंत रानी के साथ वहीं

निवास कर रहा है। कामदेव के वशीभूत हुए और सब काम को छोड़कर रहते हुए आज छठा दिन है। आपके आगमन का उसे अभी तक कोई पता नहीं है।''

गुप्तचरों के द्वारा सर्व समाचार विदित कर शत्रुघ्न ने यही अवसर अनुकूल समझकर साथ में एक लाख घुड़सवारों को लेकर वह मथुरा की ओर बढ़ गया। अर्धरात्रि के बाद शत्रुघ्न ने मथुरा के द्वार में प्रवेश किया। इधर शत्रुघ्न के बंदीगणों ने–

''राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न की जय हो।'' ऐसी जयध्वनि से आकाश को गुंजायमान कर दिया था। तब मथुरा के अन्दर किसी शत्रुराजा का प्रवेश हो गया है, ऐसा जानकर शूरवीर योद्धा जग पड़े। इधर शत्रुघ्न ने मधु के राजमहल में प्रवेश किया और मधु की आयुधशाला पर अपना अधिकार जमा लिया।

शत्रुघ्न को मथुरा में प्रविष्ट जानकर महाबलवान् राजा मधुसुन्दर रावण के समान क्रोध को करता हुआ उद्यान से बाहर निकला किन्तु शत्रुघ्न से सुरक्षित मथुरा के अन्दर व अपने महल में प्रवेश करने में असमर्थ ही रहा, तब वह अपने शूलरत्न को प्राप्त नहीं कर सका फिर भी उसने शत्रुघ्न से सन्धि नहीं की प्रत्युत् युद्ध के लिए तैयार हो गया।

वहाँ दोनों की सेनाओं में घमासान युद्ध शुरू हो गया। इधर मधुसुन्दर के पुत्र लवणार्णव के साथ कृतांतवक्त्र सेनापति का युद्ध चल रहा था। बहुत ही प्रकार से गदा, खड्ग आदि से एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए अन्त में कृतांतवक्त्र के द्वारा शक्ति नामक शस्त्र के प्रहार से वह लवणार्णव मृत्यु को प्राप्त हो गया। पुनः राजा मधु और शत्रुघ्न का बहुत देर तक युद्ध चलता रहा। बाद में मधु ने अपने को शूलरत्न से रहित जानकर तथा पुत्र के महाशोक से अत्यंत पीड़ित होता हुआ शत्रु की दुर्जेय स्थिति समझकर मन में चिंतन करने लगा–

''अहो! मैंने दुर्दैव से पहले अपने हित का मार्ग नहीं सोचा, यह राज्य, यह जीवन पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। मैं मोह के द्वारा ठगा गया हूँ। पुनर्जन्म अवश्य होगा, ऐसा जानकर भी मुझ पापी ने समय रहते हुए कुछ नहीं सोचा। अहो! जब मैं स्वाधीन था, तब मुझे सद्बुद्धि क्यों नहीं उत्पन्न हुई? अब मैं शत्रु के सन्मुख क्या कर सकता हूँ? अरे! जब भवन में आग लग जावे, तब कुंआ खुदवाने से भला क्या होगा.....?''

ऐसा चिंतवन करते हुए राजा मधु एकदम संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो गया। तत्क्षण ही उसने अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन



पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार करके चारों मंगल, लोकोत्तम और शरणभूत की शरण लेता हुआ अपने दुष्कृतों की आलोचना करके सर्व सावद्य योग–सर्व आरंभ-परिग्रह का भावों से ही त्याग करके यथार्थ समाधिमरण करने में उद्यमशील हो गया। उसने सोचा–

''अहो! ज्ञान-दर्शनस्वरूप एक आत्मा ही मेरा है, वही मुझे शरण है। न तृण सांथरा है न भूमि, बल्कि अंतरंग-बहिरंग परिग्रह को मन से छोड़ देना ही मेरा संस्तर है।.....।''

ऐसा विचार करते हुए उस घायल स्थिति में ही शरीर से निर्मम होते हुए राजा मधुसुन्दर ने हाथी पर बैठे-बैठे ही केशलोंच करना शुरू कर दिया।

युद्ध की इस भीषण स्थिति में भी अपने हाथों से अपने सिर के बालों का लोच करते हुए देखकर शत्रुघ्न कुमार ने आगे आकर उन्हें नमस्कार किया और बोले–

''हे साधो! मुझे क्षमा कीजिए.....। आप धन्य हैं कि जो इस रणभूमि में भी सर्वारंभ-परिग्रह का त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा लेने के सन्मुख हुए हैं।''

उस समय जो देवांगनाएँ आकाश में स्थित हो युद्ध देख रही थीं उन्होंने महामना मधु के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। इधर राजा मधु ने परिणामों की विशुद्धि से समता भाव धारण करते हुए प्राण छोड़े और समाधिमरण–वीरमरण के प्रभाव से तत्क्षण ही सानत्कुमार नाम के तीसरे स्वर्ग में उत्तम देव हो गये।

इधर वीर शत्रुघ्न भी संतुष्ट हुआ और युद्ध को विराम देकर सभी प्रजा को अभयदान देते हुए मथुरा में आकर रहने लगा।

**मथुरानगरी में महामारी प्रकोप, सप्तर्षि के चातुर्मास से कष्ट निवारण–** राजा मधुसुन्दर का वह दिव्य शूलरत्न यद्यपि अमोघ था, फिर भी शत्रुघ्न के पास वह निष्फल हो गया, उसका तेज छूट गया और वह अपनी विधि से च्युत हो गया। तब वह (उसका अधिष्ठाता देव) खेद, शोक और लज्जा को धारण करता हुआ अपने स्वामी असुरों के अधिपति चमरेन्द्र के पास गया। शूलरत्न के द्वारा मधु के मरण का समाचार सुनकर चमरेन्द्र को बहुत ही दुःख हुआ। वह बार-बार मधु के सौहार्द का स्मरण करने लगा। तदनंतर वह पाताल लोक से निकलकर मथुरा जाने को उद्यत हुआ। तभी गरुड़कुमार देवों के स्वामी वेणुधारी इन्द्र ने इसे रोकने का प्रयास किया किन्तु यह नहीं माना और मथुरा में पहुँच गया।

वहाँ चरमेन्द्र ने देखा कि मथुरा की प्रजा शत्रुघ्न के आदेश से बहुत बड़ा उत्सव मना रही है, तब वह विचार करने लगा–

"ये मथुरा के लोग कितने कृतघ्नी हैं कि जो दुःख-शोक के अवसर पर भी हर्ष मना रहे हैं। जिसने हमारे स्नेही राजा मधु को मारा है, मैं उसके निवासस्वरूप इस समस्त देश को नष्ट कर दूँगा।"

इत्यादि प्रकार से क्रोध से प्रेरित हो उस चमरेन्द्र ने मथुरा के लोगों पर दुःसह उपसर्ग करना प्रारंभ कर दिया। जो जिस स्थान पर सोये थे, बैठे थे, वे महारोग (महामारी) के प्रकोप से दीर्घ निद्रा को प्राप्त हो गये–मरने लगे।

इस महामारी उपसर्ग को देखकर कुल देवता की प्रेरणा से राजा शत्रुघ्न अपनी सेना के साथ अयोध्या वापस आ गये।

विजय को प्राप्त कर आते हुए शूरवीर शत्रुघ्न का श्रीराम-लक्ष्मण ने हर्षित हो अभिनंदन किया। माता सुप्रभा ने भी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुवर्ण के कमलों से जिनेन्द्रदेव की महती पूजा सम्पन्न करके धर्मात्माओं को दान दिया पुनः दीन-दुःखी जनों को करुणादान देकर सुखी किया। यद्यपि वह अयोध्या नगरी सुवर्ण के महलों से सहित थी फिर भी पूर्वभवों के संस्कारवश शत्रुघ्न का मन मथुरा में ही लगा हुआ था।

इधर मथुरा नगरी के उद्यान में गगनगामी ऋद्धिधारी सात दिगम्बर महामुनियों ने वर्षायोग धारण कर लिया–चातुर्मास स्थापित कर लिया। इनके नाम थे–सुरमन्यु, श्रीमन्यु, श्रीनिचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस और जयमित्र।

प्रभापुर नगर के राजा श्रीनंदन की धारिणी रानी के ये सातों पुत्र थे। प्रीतिंकर मुनिराज को केवलज्ञान प्राप्त हो जाने पर देवों को जाते हुए देखकर प्रतिबोध को प्राप्त हुए थे। उस समय राजा श्रीनंदन ने अपने एक माह के पुत्र को राज्य देकर अपने सातों पुत्रों के साथ प्रीतिंकर भगवान के समीप दीक्षा ग्रहण कर ली थी। समय पाकर श्रीनंदन ने केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लिया था और ये सातों मुनि तपस्या के प्रभाव से अनेक ऋद्धियों को प्राप्त कर सातऋषि (सप्तर्षि) के नाम से प्रसिद्ध हो रहे थे।

उद्यान में वटवृक्ष के नीचे ये सातों मुनि चातुर्मास में स्थित हो गये थे। इन मुनियों के तपश्चरण के प्रभाव से उस समय मथुरा में चमरेन्द्र के द्वारा फैलायी गयी महामारी एकदम नष्ट हो गई थी। वहाँ नगरी में चारों तरफ के वृक्ष फलों के भार से लद गये थे और खेती भी खूब अच्छी हो रही थी। ये मुनिराज रस-परित्याग, बेला, तेला आदि तपश्चरण करते हुए महातप कर रहे थे। कभी-कभी ये आहार के समय आकाश को लांघकर निमिषमात्र में विजयपुर, पोदनपुर आदि



दूर-दूर नगरों में जाकर आहार ग्रहण करते थे। वे महामुनिराज परगृह में अपने करपात्र में केवल शरीर की स्थिति के लिए आहार लेते थे।

एक दिन ये सातों ही महाऋषिराज जूड़ाप्रमाण (चार हाथ प्रमाण) भूमि को देखते हुए अयोध्या नगरी में प्रविष्ट हुए। वे विधिपूर्वक भ्रमण करते हुए अर्हद्दत्त सेठ के घर के दरवाजे पर पहुँचे। उन मुनियों को देखकर अर्हद्दत्त सेठ विचार करने लगा–

"यह वर्षाकाल कहाँ? और इन मुनियों की यह चर्या कहाँ? इस नगरी के आस-पास पर्वत की कंदराओं में, नदी के तट पर, वृक्ष के नीचे, शून्य घर में, जिनमंदिर में तथा अन्य स्थानों में जहाँ कहीं जो भी मुनिराज स्थित हैं, वे सब वर्षायोग पूरा किये बिना इधर-उधर नहीं जाते हैं परन्तु ये मुनि आगम के विपरीत चर्या वाले हैं, ज्ञान से रहित और आचार्यों से रहित हैं। इसलिए ये इस समय यहाँ आ गये हैं। यद्यपि ये मुनि असमय में आये थे फिर भी अर्हद्दत्त के अभिप्राय को समझने वाली वधू ने उनका पड़गाहन करके उन्हें आहारदान दिया।

आहार के बाद ये सातों मुनि तीन लोक को आनंदित करने वाले ऐसे जिनमंदिर में पहुँचे, जहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा विराजमान थी और शुद्ध निर्दोष प्रवृत्ति करने वाले दिगम्बर साधुगण भी विराजमान थे।

ये सातों मुनिराज पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चल रहे थे। ऐसे इन मुनियों को वहाँ पर स्थित द्युति भट्टारक–द्युति नाम के आचार्य देव ने देखा। इन मुनियों ने उत्तम श्रद्धा से पैदल चलकर ही जिनमंदिर में प्रवेश किया, तब द्युति भट्टारक ने खड़े होकर नमस्कार कर विधि से उनकी पूजा की।

"यह हमारे आचार्य चाहे जिसकी वंदना करने के लिए उद्यत हो जाते हैं।"

ऐसा सोचकर उन द्युति आचार्य के शिष्यों ने उन सप्तर्षियों की निंदा का विचार किया। तदनंतर सम्यक् प्रकार से स्तुति करने में तत्पर वे सप्तर्षि मुनिराज जिनेन्द्र भगवान की वंदना कर आकाशमार्ग से पुनः अपने स्थान पर चले गये। जब वे आकाश में उड़े, तब उन्हें चारण ऋद्धि के धारक जानकर द्युति आचार्य के शिष्य जो अन्य मुनि थे, उन्होंने अपनी निंदा-गर्हा आदि करके प्रायश्चित्त कर अपनी कलुषता दूर कर अपना हृदय निर्मल कर लिया।

इसी बीच में अर्हद्दत्त सेठ जिनमंदिर में आया, तब द्युति आचार्य ने कहा–

"हे भद्र! आज तुमने ऋद्धिधारी महान मुनियों के दर्शन किये होंगे। वे सर्वजगवंदित महातपस्वी मुनि मथुरा में निवास करते हैं, आज मैंने उनके साथ

वार्तालाप किया है। उन आकाशगामी ऋषियों के दर्शन से आज तुमने भी अपना जीवन धन्य किया होगा।''

इन आचार्यदेव के मुख से उन साधुओं की प्रशंसा सुनते ही सेठ अर्हद्दत्त खेदखिन्न होकर पश्चात्ताप करने लगा–

''ओह! यथार्थ को नहीं समझने वाले मुझ मिथ्यादृष्टि को धिक्कार हो, मेरा आचरण अनुचित था, मेरे समान दूसरा अधार्मिक भला और कौन होगा? इस समय मुझसे बढ़कर दूसरा मिथ्यादृष्टि अन्य कौन होगा? हाय! मैंने उठकर मुनियों की पूजा नहीं की तथा नवधाभक्ति से उन्हें आहार भी नहीं दिया।

**साधुरूपं समालोक्य न मुंचत्यासनं तु यः।**
**दृष्ट्वाऽपमन्यते यश्च स मिथ्यादृष्टिरुच्यते।।**

दिगम्बर मुनियों को देखकर जो अपना आसन नहीं छोड़ता है–उठकर खड़ा नहीं होता है तथा देखकर भी उनका अपमान करता है, वह मिथ्यादृष्टि कहलाता है।

मैं पापी हूँ, पाप कर्मा हूँ, पापात्मा हूँ, पाप का पात्र हूँ अथवा जिनागम की श्रद्धा से दूर निंद्यतम हूँ। जब तक मैं हाथ जोड़कर उन मुनियों की वंदना नहीं कर लूँगा, तब तक मेरा शरीर एवं हृदय झुलसता ही रहेगा। अहंकार से उत्पन्न हुए इस पाप का प्रायश्चित्त उन मुनियों की वंदना के सिवाय और कुछ भी नहीं हो सकता है।''

(इस कथा से यह स्पष्ट हो जाता है कि आकाशगामी मुनि चातुर्मास में भी अन्यत्र जाकर आहार ग्रहण करके आ जाते थे।)

**शत्रुघ्न के लिए महामुनि का उपदेश**–इधर इस मथुरा नगरी में इन मुनियों के चातुर्मास करने से चमरेन्द्र द्वारा किये गये सारे उपद्रव-महामारी आदि नष्ट हो गये थे। नगर में पुनः पूर्ण शांति का वातावरण हो गया था।

इधर अयोध्या से अर्हदत्त सेठ महान वैभव के साथ कार्तिक शुक्ला सप्तमी के दिन उन ऋषियों की वंदना करने के लिए पहुँच गये थे। राजा शत्रुघ्न भी इन मुनियों का उपदेश श्रवणकर भक्ति से प्रेरित हुए मथुरा के उद्यान में आ गये थे और उनकी माता सुप्रभा भी विशाल वैभव और धन आदि को लेकर इन मुनियों की पूजा करने के लिए आ गई। उन सम्यग्दृष्टि महापुरुषों ने और सुप्रभा आदि रानियों ने मुनिराज की महान पूजा की। उस समय वहाँ वह उद्यान और मुनियों के आश्रम का स्थान प्याऊ, नाटकशाला, संगीतशाला आदि से सुशोभित हुआ



स्वर्गप्रदेश के समान मनोहर हो गया था।

अनन्तर भक्ति एवं हर्ष से भरे हुए शत्रुघ्न ने वर्षायोग को समाप्त करने वाले उन मुनियों को पुनः पुनः नमस्कार करके उनसे आहार ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की, तब इन सातों में जो प्रमुख थे, वे ''सुरमन्यु'' महामुनि बोले–

''हे नरश्रेष्ठ! जो आहार मुनियों के लिए संकल्प कर बनाया जाता है, दिगम्बर मुनिराज उसे ग्रहण नहीं करते हैं। जो आहार न स्वयं किया गया है न कराया गया है और जिसमें न बनाते हुए को अनुमति दी गई है ऐसे नवकोटि विशुद्ध आहार को ही साधुगण ग्रहण करते हैं।''

पुनः शत्रुघ्न ने निवेदन किया–

''हे भगवन् ! आप भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने वाले हैं। आप अभी कुछ दिन और यहीं मथुरा में ठहरिये। आपके प्रभाव से ही यहाँ महामारी की शांति हुई है....।''

पुनः शत्रुघ्न चिंता करने लगा–

''ऐसे महामुनियों को विधिवत् आहार दान देकर मैं कब संतुष्ट होऊँगा?'' शत्रुघ्न को नतमस्तक देखकर उन मुनिराज ने पुनः आगे आने वाले काल का वर्णन करते हुए उपदेश दिया–

''हे राजन् ! जब अनुक्रम से तीर्थंकरों का काल व्यतीत हो जायेगा–पंचम काल आ जाएगा, तब यहाँ धर्म कर्म से रहित अत्यन्त भयंकर समय आ जाएगा। दुष्ट पाखण्डी लोगों द्वारा यह परम पावन जैन शासन उस तरह तिरोहित हो जायेगा कि जिस तरह धूलि के छोटे-छोटे कणों द्वारा सूर्य का बिम्ब ढक जाता है। यह संसार चोरों के समान कुकर्मी, क्रूर, दुष्ट, पाखण्डी लोगों से व्याप्त होगा। पुत्र, माता-पिता के प्रति और माता-पिता पुत्रों के प्रति स्नेह रहित होंगे। उस कलिकाल में राजा लोग चोरों के समान धन के अपहर्ता होंगे। कितने ही मनुष्य यद्यपि सुखी होंगे, फिर भी उनके मन में पाप होगा, वे दुर्गति में ले जाने वाली ऐसी विकथाओं से एक-दूसरे को गोहित करते हुए प्रवृत्ति करेंगे।

हे शत्रुघ्न! कषायबहुल समय के आने पर देवागमन आदि समस्त अतिशय नष्ट हो जायेंगे। तीव्र मिथ्यात्व से युक्त मनुष्य व्रतरूप गुणों से सहित एवं दिगम्बर मुद्रा के धारक मुनियों को देखकर ग्लानि करेंगे। अप्रशस्त को प्रशस्त मानते हुए कितने ही दुर्बुद्धि लोग भय पक्ष में उस तरह जा पड़ेंगे जिस तरह कि पतंगे अग्नि में जा पड़ते हैं। कितने ही मूढ़ मनुष्य हंसी करते हुए शान्तचित्त मुनियों को

तिरस्कृत करके मूढ़ मनुष्यों को आहार देवेंगे। जिस प्रकार शिलातल पर रखा हुआ बीज यद्यपि सदा सींचा जाय तो भी उसमें फल नहीं लग सकता है, वैसे ही शील रहित मनुष्यों के लिए दिया हुआ दान भी निरर्थक होता है। 'जो गृहस्थ मुनियों की अवज्ञा कर गृहस्थ के लिए आहार देते हैं, वे मूर्ख चंदन को छोड़कर बहेड़ा ग्रहण करते हैं।

**अवज्ञाय मुनीन् गेही गेहिने यः प्रयच्छति।**
**त्यक्त्वा स चंदनं मूढो गृह्णत्येव विभीतकं।।67।।**

हे शत्रुघ्न! इस प्रकार दुषमता के कारण निकृष्ट काल को आने वाला जानकर तुम आत्मा के लिए हितकर शुभ और स्थायी ऐसा कार्य करो। तुम नामी पुरुष हो अतः निर्ग्रन्थ मुनियों को आहार देने का निश्चय करो, यही तुम्हारी धन-संपदा का सार है। हे राजन् ! आगे आने वाले काल में थके हुए मुनियों के लिए आहार देना अपने गृहदान के समान एक बड़ा भारी आश्रय होगा। इसलिए हे वत्स! तुम ये दान देकर इस समय गृहस्थ के शीलव्रत का नियम धारण करो और जीवन को सार्थक बनाओ। मथुरा के समस्त लोग समीचीन धर्म को धारण करें। दया और वात्सल्य भाव से सम्पन्न तथा जिनशासन की भावना से युक्त होवें। घर-घर में जिनप्रतिमाएँ स्थापित की जावें, उनकी पूजाएँ हों, अभिषेक हों और विधिपूर्वक प्रजा का पालन किया जाये।

**सप्तर्षि प्रतिमा दिक्षु चतसृष्वपि यत्नतः।**
**नगयां कुरू शत्रुघ्न! तेन शांतिर्भविष्यति।।74।।**
**अद्यप्रभृति यद्गेहे जैनं बिंबं न विद्यते।**
**मारी भक्ष्यति यद्व्याघ्री यथाऽनाथं कुरंगकं।।75।।**

(पद्मपुराण, पर्व 92)

हे शत्रुघ्न! इस नगरी की चारों दिशाओं में सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ स्थापित करो, उसी से सब प्रकार की शांति होगी। आज से लेकर जिस घर में जिनप्रतिमा नहीं होगी, उस घर को मारी उसी तरह खा जायेगी कि जिस तरह व्याघ्री अनाथ मृग को खा जाती है। जिसके घर में अंगूठा प्रमाण भी जिनप्रतिमा होगी, उसके घर में गरुड़ से डरी हुई सर्पिणी के समान मारी का प्रवेश नहीं होगा।''

महामुनि के इस उपदेश को सुनकर हर्ष से युक्त हो राजा शत्रुघ्न ने कहा–

''आपने जैसी आज्ञा दी है, वैसा ही हम लोग करेंगे'' इत्यादि। इसके बाद वे महामना सातों मुनि आकाश में उड़कर विहार कर गये। वे सप्तर्षि निर्वाण क्षेत्रों



की वंदना करके अयोध्या में सीता के घर उतरे। अत्यधिक हर्ष को धारण करने वाली एवं श्रद्धा आदि गुणों से सुशोभित सीता ने उन्हें विधिपूर्वक उत्तम आहार दिया। जानकी के नवधाभक्ति से दिये गये सर्वगुणसम्पन्न आहार को ग्रहण कर उसे शुभाशीर्वाद देकर वे मुनि आकाश मार्ग से चले गये।

अनन्तर शत्रुघ्न ने नगर के भीतर और बाहर सर्वत्र जिनेंद्र भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करायीं तथा ईतियों को दूर करने वाली सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ भी चारों दिशाओं में विराजमान करायीं। उस समय वहाँ पर सर्व प्रकार से सुभिक्ष, क्षेम और शांति का साम्राज्य हो गया। तब राजा शत्रुघ्न निर्विघ्नरूप से राज्य का संचालन करते हुए और प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हुए सुखपूर्वक मथुरा नगरी में रहने लगे।

# भजन

**-आर्यिका चन्दनामती**

***तर्ज–जिंदगी प्यार का गीत है.....***

जन्म मानव का पाया है जो,
उसे सार्थक तो करना पड़ेगा।
वंश उत्तम ये पाया है जो,
मूल्यांकन तो करना पड़ेगा।।टेक.।।
कई जन्मों का पुण्य खिला, जिससे जिनधर्म उत्तम मिला।
गुरु का उपदेश ऐसा मिला, ज्ञान का दीप मन में जला।।
पाके सम्यक्त्व के रत्न को,
शिव डगर पे तो चलना पड़ेगा।।1।।
शुद्ध भोजन करोगे यदी, बुद्धि अच्छी बनेगी तभी।
छानकर जल पिओगे यदी, वाणी पावन बनेगी तभी।।
मन की शुद्धी के हेतू तुम्हें,
स्वच्छ भोजन तो करना पड़ेगा।।2।।
जाति औ कुल की रक्षा करो, शास्त्र औ गुरु की शिक्षा वरो।
दान-पूजन के योग्य बनो, आगे दीक्षा के योग्य बनो।।
शुद्ध खानदान रखना है यदि,
जाति में ब्याह करना पड़ेगा।।3।।
अपने बच्चों को संस्कार दो, पिण्ड शुद्धी का उपहार दो।
मुक्ति का मार्ग साकार हो, निज व पर का भी उपकार हो।।
''चन्दनामति'' सुनो भाइयों!
तुम्हें कुल शुद्धि रखना पड़ेगा।।4।।



# भजन

**-आर्यिका चन्दनामती**

***तर्ज –अरे रे.....***

जयति जय ज्ञानमती जी, गणिनि माँ ज्ञानमती जी।
वंदना करूँ मैं तेरी मात रे।
शरदपूर्णिमा का तू है चांद मेरी मात,
करती है ज्ञान की तू सदा बरसात।
छोटेलाल मोहिनी ने दिया ऐसा चांद,
जिसकी नहीं दुनिया में कोई मिशाल।।
जयति जय.....।।टेक.।।
तीर्थों में जैसे सम्मेदशिखर है,
मूर्तियों में जैसे गोमटेश प्रभु हैं।
गुरुओं में जैसे शान्तिसिन्धु हुए हैं,
माताओं में ज्ञानमती मात वैसे हैं।।
जयति जय.....।।1।।
तीर्थ को बना के तीर्थ स्वयं बन गईं,
तुम तो जैनशासन की ही कीर्ति बन गईं।
शास्त्र लिख-लिखके स्वयं शास्त्र बन गईं,
ज्ञानियों में ज्ञान का उद्यान बन गईं।।
जयति जय.....।।2।।
ऐसी आत्माएँ कभी-कभी जन्म लें,
जन्म लेके इस धरा को धन्य कर दें।
भारत माँ का आँचल नहीं तुमसे सूना हो,
''चंदनामती'' प्रभाव दिन दूना हो।।
जयति जय.....।।3।।